Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

धार्मिक शिक्षा

तृतीय भाग

(कक्षा ३ के लिये)

लेखकः—
श्री पं० सूर्यदेव शर्मा, साहित्यालङ्कार,
सिद्धान्त-शास्त्री, एम० ए०, एल० टी०,
हैडमास्टर, डी० ए० वी० हाईस्कूल,
अजमेर।

१५
२२८ (२)

प्रकाशकः—
...त्य मण्डल लिमिटेड, अजमेर

...म्बर सन् १९५० ई० | मूल्य
भाद्रपद २००७ वि० | ।) आना

२२८ (२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१५/२२४(२)
२२२५२

	विषय	पृष्ठ
१.	हरिगीतिका	१
	ईश्वराराधन	२
	भोत्तेर (धर्म-भक्ति-तीर्थ)	३
	... और ... के	९
		१०
		११
		१४
	... प्रकार की निशानियां	१५
	...न पन्द्रह दिन से	१६
	...पास नहीं रख	१६
	...नः आज्ञा	
		१७
		१९
		२७
		२८

१५/२२४(२)
२२२५२

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५
२२४

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
Stock Verification-2024
25595

वर्ग संख्या..... आगत संख्या.....

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित हैं। इस तिथि सहित ३०वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

धार्मिक शिक्षा

(तृतीय भाग)

COMPILED
CHECKED 1973
Initial

कक्षा ३ के लिए

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

यजु० ३२। १४॥

(अर्थ)—हे मेधाविन् परमात्मन् ! जिस मेधा नामक बुद्धि की प्रार्थना, उपासना और याचना, हमारे देवगण, पितृगण और ऋषिगण सर्वदा से करते चले आये हैं, उसी मेधा बुद्धि का दान आप कृपा करके आज हम सबों को दीजिये, जिससे हमारे सम्पूर्ण कार्य यथाविधि समाप्त हों।

हरि-गीतिका

जगदीश ! जिस वर बुद्धि से, सब देवगण तरते रहे।
सब पितृगण भी प्रार्थना, जिसकी सदा करते रहे॥
उस श्रेष्ठ मेधा बुद्धि का, शुभ दान हमको दीजिये।
सब काम में, सुखमय सफल, कल्याणकारी कीजिये॥

"सूर्य"

15,224(2)
25595.2
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वराराधन

(१)—त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

(२)—त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं,
त्वमेकं जगत्-पालकं स्वप्रकाशम्।
त्वमेकं जगत्कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ,
त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्॥

(३)—नमस्ते सते ते जगत्कारणाय।
नमस्ते चिते सर्व-लोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैत-तत्त्वाय मुक्ति-प्रदाय,
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय।

(इस पुस्तक के प्रथम भाग में ईश्वर, वेद, आर्यसमाज, आर्यावर्त, स्वामी दयानन्द, उपनिषद्, शास्त्र और देवता आदि का साधारण ज्ञान दिया जा चुका है, अब उसके आगे प्रश्नोत्तर रूप में कुछ और साधारण ज्ञान दिया जा रहा है।)

(प्रश्न)— धर्म किसे कहते हैं?

(उत्तर)—ईश्वर की आज्ञापालन, पक्षपातरहित न्याय, सर्वहित करना, सब मनुष्यों के लिये समान माननीय धर्म कहलाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(प्रश्न)—'धर्म' शब्द का अर्थ क्या है ?

(उत्तर)—जो धारण करने योग्य हो अथवा जिस से किसी वस्तु की सत्ता रहे, वह 'धर्म' है, जैसे अग्नि का धर्म प्रकाश और गर्मी है जब तक यह दोनों गुण उसमें रहते हैं वह अग्नि कहलाती है और उनके नष्ट हो जाने से अग्नि भी राख बन जाती है।

(प्रश्न)—मनुष्य का धर्म क्या है ?

(उत्तर)—अच्छे गुणों को धारण करके प्राणिमात्र का उपकार करते हुए मोक्ष का प्राप्त करना।

(प्रश्न)— धर्म के लक्षण क्या हैं:—

(उत्तर)—धर्म के दश लक्षण हैं:—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं, शौचमिन्द्रिय-निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्मलक्षणम् ॥मनु०॥

अर्थात्—धैर्य, क्षमा, मन को वश में करना, चोरी न करना, शुद्धता, इन्द्रियों का दमन, आत्मज्ञान, विद्या, सत्य और क्रोध न करना, धर्म के दश लक्षण हैं।

(भजन)

दश चिह्न धर्म के भाई, महाराज मनू बतलाते ॥ टेक ॥
पहले तुम धीरज को धारो दूजे सब के वचन सहारो ॥हरे॥
तीजे मन अपने को मारो, यहि उपदेश सुनाते ॥ १ ॥
चौथे तज चोरी का पेशा, मिटे सकल नर तेरा कलेशा ॥हरे॥
रहो पांचवें शुद्ध हमेशा, सारे मल धुल जाते ॥ २ ॥
छठे इन्द्रियां वश में करना, सप्तम ज्ञान विचार में धरना ॥हरे॥
अष्टम चित दे विद्या पढ़ना, जिस विन पशू कहाते ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नव सत्य को धारण कीजै, दशवें क्रोध त्याग सब दीजै ॥ हरं ॥
यही धर्म लक्षण सुन लीजै, "तेजसिंह" पद गाते ॥ ४ ॥

(प्रश्न)—लोग तो बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म, जैन धर्म इत्यादि को धर्म कहते हैं ?

(उत्तर) यह सब धर्म नहीं, मत या मजहब हैं, जो एक दूसरे से भिन्न हैं। धर्म तो मनुष्यमात्र के लिये एक होना चाहिये।

(प्रश्न)—धर्म का क्या फल होता है ?

(उत्तर) – धर्म करने से स्वर्ग या मोक्ष मिलता है।

(प्रश्न)—'स्वर्ग' किसे कहते हैं।

(उत्तर)—जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है वह "स्वर्ग" कहाता है।

(प्रश्न)—और "नरक" किसे कहते हैं ?

(उत्तर)—जो विशेष दुःख और दुःख की सामग्री को जीव को प्राप्त होना है उसको 'नरक' कहते हैं।

(प्रश्न)—यह स्वर्ग और नरक कहीं आकाश में बने हुए हैं ?

(उत्तर)—नहीं, यह कोई विशेष स्थान या मकान नहीं हैं, किन्तु इसी संसार में जीवात्मा को विशेष सुख और दुःख के रूप में प्राप्त हो सकते हैं।

(प्रश्न)—और 'मोक्ष' किसे कहते हैं ?

(उत्तर)—जिससे सब बुरे काम और जन्म मरण आदि दुःखसागर से छूट कर सुखरूप परमेश्वर को प्राप्त होके सुख ही में रहना है वह 'मोक्ष' या 'मुक्ति' कहाती है।

(प्रश्न)—मुक्ति के साधन क्या हैं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(उत्तर)—ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना, धर्म का आचरण और पुण्य का करना, सत्संग, विश्वास, तीर्थ-सेवन, सत्पुरुषों का संग और परोपकारादि सब अच्छे कामों का करना, तथा सब दुष्ट कर्मों से अलग रहना, यह सब मुक्ति के साधन हैं।

(प्रश्न)—'तीर्थ' किसे कहते हैं ?

(उत्तर)—जिससे जीव दुःख-सागर से तर जाय वही तीर्थ है, "जनः येन तरति तत् तीर्थम्"। जितने विद्याभ्यास, सुविचार, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान, सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेंद्रियता आदि उत्तम कर्म हैं वे सब तीर्थ कहलाते हैं।

(प्रश्न)—लोग तो काशी, प्रयाग, पुष्कर आदि में तीर्थ करने जाते हैं वे क्या हैं ?

(उत्तर)—यह तीर्थ नहीं हैं, केवल वहां जाने से मनुष्य नहीं तर सकते। हृदय में परमात्मा की भक्ति और उत्तम गुण धारण करने से ही तर सकते हैं। देखो किसी भक्त कवि ने कितना सुन्दर कहा है:—

(भजन)

तरेगा तो वो ही जाके हृदय में हरि है ॥ टेक ॥
गंगा के नहाने से जो पापी नर तरि जायें,
मीन क्यों न तरै जाको जल ही में घर है ॥ १ ॥
मूँड़ के मुड़ाने से जो पापी नर तरि जायें,
भेड़ क्यों न तरै जाको मुड़े सब घर है ॥ २ ॥
जटा के बढ़ाने से जो पापी नर तरि जायें,
मोर क्यों न तरै जाके लम्बे लम्बे पर हैं ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंख के बजाने से जो पापी नर तर जाय,
गधा क्यों न तरै जाको शंख ही सो स्वर है ॥ ४ ॥
तिलक के लगाने से जो पापी नर तर जायें,
हाथी क्यों न तरै जाके लगता सेंदुर है ॥ ५ ॥

इसलिये विद्यार्थियों के लिये तो विद्या पढ़ना, सत्संग, ब्रह्मचर्य, माता, पिता और गुरु की सेवा और प्रतिदिन संध्या ये ही पाँच बड़े बड़े तीर्थ हैं। काशी, प्रयाग, पुष्कर आदि तीर्थों में भटकना व्यर्थ है।

(प्रश्न)—ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना में क्या अन्तर है ?

(उत्तर)—स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी छोटी सी पुस्तक 'आर्योद्देश्य-रत्नमाला' में इनका वर्णन इस प्रकार किया है:—

१—स्तुति—जो ईश्वर या किसी दूसरे पदार्थ के गुण, ज्ञान, कथन, श्रवण और सत्यभाषण करना है वह 'स्तुति' कहलाती है।

२—स्तुति का फल—जो गुण ज्ञान आदि के करने से गुणवाले पदार्थों में प्रीति होती है यह 'स्तुति का फल' कहाता है।

३—प्रार्थना—अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिये परमेश्वर वा किसी सामर्थ्य वाले मनुष्य के सहाय लेने को 'प्रार्थना' कहते हैं।

४—प्रार्थना का फल—अभिमान का नाश, आत्मा में प्रसन्नता, गुणग्रहण में पुरुषार्थ और अत्यन्त प्रीति का होना 'प्रार्थना का फल' है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५–उपासना—जिससे ईश्वर ही के आनन्दस्वरूप में अपने आत्मा को मग्न करना होता है उसको 'उपासना' कहते हैं।

६–उपासना के फल—आत्मा की उन्नत अवस्था, उपास्यदेव के गुणों का ग्रहण और परमानन्द की प्राप्ति का होना ही 'उपासना का फल' है।

७–निर्गुणोपासना—शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, संयोग, वियोग, हल्का, भारी, अविद्या, जन्म और मरण और दुःख आदि गुणों से रहित परमात्मा को जानकर जो उसकी उपासना करना है उसको 'निर्गुणोपासना' कहते हैं।

८–सगुणोपासना—जिसको सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, शुद्ध, नित्य, आनन्द, सर्वव्यापक, एक, सनातन, सर्वकर्त्ता, सर्वाधार, सर्वस्वामी, सर्वनियन्ता, सर्वान्तर्यामी, मंगलमय, सर्वानन्दप्रद, सर्वपिता, सब जगत् का रचने वाला, न्यायकारी, दयालु आदि सत्यगुणों से युक्त जानके जो ईश्वर की उपासना करनी है सो 'सगुणोपासना' कहलाती है।

(प्रश्न)—क्या केवल परमेश्वर का नाम रटते रहने से मुक्ति मिल सकती है?

(उत्तर)—कभी नहीं। ज्ञान, कर्म और उपासना तीनों ही मुक्ति के लिये आवश्यक हैं। ज्ञान वेद पढ़ने और सांसारिक पदार्थों का विवेचन करने से प्राप्त होता है। ज्ञान के विना कुछ भी नहीं हो सकता, मुक्ति तो क्या प्राप्त होगी? कहा भी है—'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' अर्थात् विना ज्ञान के मुक्ति नहीं मिल सकती।

दोहा—विना ज्ञान के जगत् में, कोई काम न होय।
वेद पढ़े, ज्ञानी बने, लहे मुक्ति को सोय॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(प्रश्न)—'कर्म' किसे कहते हैं ?

(उत्तर)—जो मन, इन्द्रिय और शरीर में जीव चेष्टाविशेष करता है वह 'कर्म' कहाता है। शुभ अशुभ और मिश्र भेद से यह तीन प्रकार का है।

(प्रश्न)—कर्म के और कितने भेद हैं ?

(उत्तर)—कर्म और भी तीन प्रकार का होता है:—

१—क्रियमाण—जो वर्त्तमान में किया जाता है सो 'क्रियमाण कर्म कहाता है।

२—सञ्चित—जो क्रियमाण का संस्कार ज्ञान में जमा होता है उसको 'सञ्चित' कर्म कहते हैं।

३—प्रारब्ध—जो पूर्व किये हुए कर्मों के सुख दुःख रूप फल का भोग किया जाता है उसको 'प्रारब्ध' कहते हैं।

जीवन और मृत्यु के प्रश्न

१—ईश्वर की उपासना जीवन और प्रकृति की उपासना मृत्यु है, जिसमें पाषाण-पूजा, भूत-पूजा तथा जड़ पदार्थों की पूजा सम्मिलित है। जड़-पूजा छोड़कर हमें ईश्वर की उपासना करनी चाहिये।

२—विद्या जीवन, अविद्या मृत्यु है।

३—सत्य जीवन, झूठ मृत्यु है।

४—धर्म जीवन, अधर्म मृत्यु है।

५—परोपकार जीवन, स्वार्थ मृत्यु है।

६—पुरुषार्थ जीवन, आलस्य मृत्यु है।

७—ब्रह्मचर्य जीवन, व्यभिचार मृत्यु है।

८—सादापन जीवन, सजावट मृत्यु है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९—एकता जीवन, वैर मृत्यु है।
१०—मित्रता जीवन, शत्रुता मृत्यु है।
११—वीरता जीवन, कायरता मृत्यु है।
१२—सत्संग जीवन, कुसंग मृत्यु है।
१३—संतोष जीवन, लोभ मृत्यु है।
१४—अहिंसा जीवन, हिंसा मृत्यु है।
१५—कृतज्ञता जीवन, कृतघ्नता मृत्यु है।

प्रत्येक मनुष्य जीवन से प्रेम रखता और मृत्यु से डरता है, इस कारण उपरोक्त मृत्यु के साधनों से घृणा करनी उचित है।

उपदेश-संग्रह

(दोहे)

प्रात हि उठ के नित्य प्रति, करिये प्रभु को ध्यान।
जाते जग में होय सुख, अरु उपजे सत् ज्ञान॥ १॥

काहू ते कडुवो वचन, कहो न कबहूं जान।
तुरत मनुज के हृदय को, छेदत है जिमि बान॥ २॥

पढ़ने में कबहूं नहीं, नागा करिये चूक।
कुपढ़ लोग मांगत फिरें, सहें निरादर भूक॥ ३॥

मीठी बोली बोलिये, करके सबसों प्रीति।
करें प्रेम तासों सकल, लखि सुक सारिक रीति॥ ४॥

यदपि होत पितु मातु को, लखि सुत पै सम नेह।
लखि सपूत ठंडक लहै, जरै कुसुत लखि देह॥ ५॥

जो जन ईर्षा धारि मन, जरत देखि पर-वित्त।
कैसे ऐसे पुरुष के, शीतलता रहे चित्त॥ ६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन के दुर्जन के वचन, हो रहिये चुप चाप ।
करे जु समता तासु की, नीच कहावत आप ॥ ७ ॥
जे आपस में वैर करि, मिलें और के साथ ।
वे भोगत हैं बहुत दुख, पड़ वैरी के हाथ ॥ ८ ॥

(कुंडलियां)

साईं सब संसार में, मतलब का व्यौहार ।
जब लगि पैसा गांठ में, तबलगि ताको यार ॥
तब लगि ताको यार, यार संग ही संग डोले ।
पैसा रहा न पास, यार मुख से नहिं बोले ॥
कह गिरधर कविराय, जगत् को याही लेखा ।
करत निस्वार्थ प्रीति, यार हम विरला देखा ॥

हवन-मन्त्राः

नोट—इस पुस्तक के पहले दो भागों में संध्या के सब मन्त्र दिये जा चुके हैं यहां हवन के मंत्र दिये जाते हैं ।

ओं भूर्भुवः स्वः ॥

इस मन्त्र को बोलकर अग्नि लाकर निम्नलिखित मन्त्र से उसे कुण्ड में रक्खे ।

**ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा ।
तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्ना-
द्यायादधे ॥** (यजु० अ० ३ । मं० ५)

(अग्नि प्रज्वलित करने का मन्त्र)

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्तेस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥ (यजु० अ० ३ । मं०५)

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे–इदं न मम ॥२॥

ओम् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा ॥ इदमग्नये--इदं न मम ॥ २ ॥

इससे और

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे–इदं न मम॥३॥

इस मन्त्र से अर्थात् दोनों मन्त्रों से दूसरी

ओं तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छो-चा यविष्ठ्य स्वाहा ॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे–इदं न मम ॥

इस मन्त्र से तीसरी आहुति देवे ।

नीचे लिखे मन्त्र से पाँच आहुति देना ।

ओम् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे–इदं न मम॥१॥

तत्पश्चात् अञ्जलि में जल लेके वेदी के पूर्व दिशा आदि चारों ओर छिड़कावे, इस के ये मन्त्र हैं—

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ॥ इस मन्त्र से पूर्व में,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ इससे पश्चिम में,

ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥ इससे उत्तर में और—

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥

इस मन्त्र से वेदी के चारों ओर जल छिड़कावे। इसके पश्चात्

ओं अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये–इदं न मम ॥

इस मन्त्र से वेदी के दक्षिण भाग में प्रज्वलित समिधा पर आहुति देनी, तत्पश्चात्

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये--इदं न मम ॥

ओं इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय--इदं न मम ॥

इन दो मन्त्रों से वेदी के मध्य में दो आहुति देनी। उसके पश्चात् नीचे लिखे हुए मन्त्रों से प्रातःकाल आहुति करे—

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ १ ॥

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ३ ॥

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥४॥

अब नीचे लिखे हुए मन्त्र सायंकाल में अग्निहोत्र के जानो।

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि स्वाहा ॥ १ ॥

ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(इस मन्त्र को मन से उच्चारण करके तीसरी आहुति देनी)

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥

अब निम्नलिखित मन्त्रों से प्रातः सायं आहुति देनी चाहिये:—

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ॥ इदमग्नये प्राणाय—इदं न मम। ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा ॥ इदं वायवेऽपानाय—इदं न मम। ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ॥ इदमादित्याय व्यानाय—इदं न मम ॥ ओं भूर्भुवःस्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ॥ इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः—इदं न मम ॥ ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥

ओं सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा ॥

आर्यसमाज का साधारण परिचय

(१) स्थापना

आर्यसमाज भारत में एक जीती-जागती संस्था है, जिसके सभासद् कर्मशील, जागरूक और सुधारप्रिय होते हैं। आर्यसमाज कोइ नवीन धर्म नहीं है किन्तु प्राचीन वैदिक धर्म को ही वह मानता और उसी का प्रचार करता है। आर्यसमाज की स्थापना सब से प्रथम बम्बई में चैत्र शुक्ला प्रतिपदा १९३२ वि० शनिवार अर्थात् १० अप्रेल सन् १८७५ ई० को हुई थी। इसके संस्थापक वेदों के परम विद्वान्, देश के महासुधारक तथा आर्यजाति के परम हितैषी श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) समाज का संगठन

आर्यसमाज का संगठन भारत की संस्थाओं में सब से अधिक दृढ़ और श्रेष्ठ है। उसका साधारणरूप इस प्रकार का है—

(१) प्रत्येक बड़े ग्राम तथा नगर में आर्यसमाज स्थापित है। कम से कम ९ सभासद् होने पर आर्यसमाज खोल दिया जाता है। प्रत्येक समाज में प्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष आदि पदाधिकारी होते हैं।

(२) ज़िले की सब समाजों से मिलकर आर्य उप-प्रतिनिधि सभा बनती है।

(३) ऐसे समस्त जिलों की उपप्रतिनिधि सभाओं और आर्य-समाजों के ऊपर प्रत्येक प्रान्त में एक-एक प्रान्तिक आर्यप्रतिनिधि सभा है।

(४) समस्त प्रान्तिक प्रतिनिधि सभाओं के ऊपर एक "सार्वदेशिक" सभा है। जिसका मुख्य कार्यालय भारत की राजधानी दिल्ली में है। जिसमें भारत वर्ष के अतिरिक्त अफ्रीका, मारीशस, फ़िजी आदि की आर्यप्रतिनिधि सभायें भी सम्मिलित हैं। इसी सभा के नीचे आर्य-रक्षा-समिति, दलितोद्धार-सभा, धर्मार्य-सभा तथा अन्य कई सभायें कार्य करती हैं।

(३) प्रचार कार्य

इस समय समस्त भूमण्डल पर लगभग १७०० आर्यसमाज खुले हुए हैं। भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त के अतिरिक्त अफ्रीका, अरब, फ़ारस, अफ़गानिस्तान, बिलोचिस्तान, मैसोपोटामियां, असीरिया, जर्मनी, इङ्गलैण्ड, अमेरिका, गायना, ट्रानीदाद, मॉरीशस, फ़िजी, ब्रह्मा, स्याम, सिंगापुर, अनाम, कम्बोडिया, हाँगकाँग, जावा आदि में भी आर्यसमाज स्थापित हैं और अपना कार्य कर रहे हैं। इस समय १२२ संन्यासी, २६ वानप्रस्थी, १४६ वैतनिक उपदेशक और लगभग ३०० अवैतनिक उपदशक धर्मप्रचार के कार्य में लगे हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) शिक्षा-कार्य

आर्यसमाज की ओर से ५३ गुरुकुल, १२ कालेज, २०० डी० ए० वी० हाईस्कूल, १५० मिडिल स्कूल, १४२ रात्रिपाठशालाएं, ३ कन्या-कालेज, २३१ कन्या पाठशालायें, ११२ संस्कृत-पाठशालायें, ३४७ दलित-पाठशालाएं, ३ उपदेशक विद्यालय, २३ अनाथालय, ४७ विधवा आश्रम, ४९ पुस्तकालय और ११ प्रेस चल रहे हैं जिनसे ३७ आर्य समाचारपत्र और पत्रिकायें निकलती हैं ।

इन संख्याओं के अतिरिक्त आर्यसमाज ने अछूतोद्धार, समाज-सुधार, देशभक्ति, भाषा और भारतीयता के प्रचार का भी अनुपम प्रयत्न करके देश में एक नवीन जागृति उत्पन्न करदी है । प्रत्येक आर्यसमाज का साप्ताहिक अधिवेशन प्रति रविवार को हुआ करता है जिसमें उत्तम भजन, उपदेश और कथाएं हुआ करती हैं। आर्यसमाज के मुख्य १० नियम हैं जो उस पुस्तक के प्रथम भाग में दिये जाचुके हैं। ये नियम विश्वव्यापी धर्म के आधारभूत हैं। इसलिये प्रत्येक देश और मानव-जातिहितैषी मनुष्य को आर्यसमाज की सहायता करनी चाहिए।

नैतिक शिक्षा

१

चोरी का त्याग

बालको ! अभी तुम पढ़ चुके हो कि धर्म के लक्षणों में चोरी का त्याग भी एक है। किसी दूसरे की वस्तु को उसकी विना आज्ञा के लेना या किसी काम में लाना चोरी करना कहलाता है। जो मनुष्य चोरी करता है, वह जीवन में कभी सुखी नहीं रह सकता, उसकी आत्मा दिन रात भयभीत रहती है। सब लोग उसकी निन्दा करते हैं। पुलिस वाले उसे पकड़ कर जेलखाने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्द कर देते हैं और उसे बड़ा कड़ा दण्ड दिया जाता है। जिनमें चोरी की बुरी आदत छोटेपन में पड़ जाती है वह फिर बड़ी कठिनता से छूटती है। पहले तो बालक छोटी-छोटी वस्तुएं चुराता फिर वही आगे चलकर एक बड़ा बदमाश चोर बन जाता है। इसलिए ऐ बालको! तुम किसी दूसरे की चीज़ पर कभी हाथ न डालो। अगर कोई वस्तु तुम्हें कहीं पड़ी हुई मिले तो लाकर अपने अध्यापक को दे दो और सबको बतला दो कि जिसकी हो वह लेले। एक बार एक डी० ए० वी० हाईस्कूल के एक विद्यार्थी को स्वयंसेवक का कार्य करते हुए गुरुकुल के मेले में एक सोने का हार मिला था उसको उसने उसी समय लाकर अपने अध्यक्ष को दे दिया, जिससे सारे मेले में उसकी और उसके स्कूल की बड़ी प्रशंसा हुई और उस हारवाले सेठ ने उसे डी० ए० वी० हाई-स्कूल को जिसमें ऐसे ईमानदार छात्र पढ़ते थे बहुत कुछ दान दिया और उसी विद्यार्थी का एक बड़ा फ़ोटो उस स्कूल में हमेशा के लिये लगवा दिया गया। जिससे उसका नाम अमर हो गया। बालको! क्या तुम भी इसी प्रकार ईमानदारी का कोई काम करके अपना और अपने स्कूल का नाम और यश बढ़ाओगे?

(दोहा)

कबहुँ पराइ वस्तु पै, जो नहिं मन ललचाय।
वही मनुज संसार में, धन, यश गौरव पाय॥ १॥
कबहुं न चोरी कीजिये, यदपि मिले बहु वित्त।
नर फँस ताके फन्द में, पावे लाज अमित्त॥ २॥
जान सबै गति ईस की, करो न कबहूं पाप।
सबहिं चराचर जगत् को, देखत है वह आप॥ ३॥

विद्यार्थी के दोष

आलस्य, अभिमान, नशा करना, मूढ़ता, चपलता, व्यर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर-उधर की अण्डबण्ड बातें करना, जड़ता, कभी पढ़ना कभी न पढ़ना, अभिमान और लोभ-लालच, ये सात विद्यार्थियों के लिये विद्या के विरोधी दोष हैं, क्योंकि जिस की सुख-चैन करने की इच्छा है उसको विद्या कहां और जिस का चित्त विद्या ग्रहण करने कराने में लगा है उसको विषय सम्बन्धी सुख चैन कहाँ ? इसलिये विषय सुखार्थी विद्या को छोड़े और विद्यार्थी विषय सुख से अवश्य अलग रहे नहीं तो परम धर्म रूप विद्या का पढ़ना पढ़ाना कभी नहीं हो सकेगा। महाभारत में विदुर-प्रजागर पर्व अध्याय ६१ में लिखते हैं।

(प्रश्न) कैसे-कैसे मनुष्य विद्याओं की प्राप्ति कर और करा सकते हैं ?

भीष्मजी युधिष्ठिर से कहते हैं कि हे राजन् ! तू ब्रह्मचर्य के गुण सुन। जो मनुष्य इस संसार में जन्म से लेके मरणपर्यन्त ब्रह्मचारी होता है। उसको कोई शुभ गुण अप्राप्त नहीं रहता, ऐसा तू जान कि जिसके प्रताप से अनेक क्रोड़ ऋषि ब्रह्मलोक अर्थात् सर्वानन्द-स्वरूप परमात्मा में वास करते और इस लोक में भी अनेक सुखों को प्राप्त होते हैं, जो निरन्तर सत्य में रमण, जितेन्द्रिय शान्तात्मा, उत्कृष्ट, शुभगुण-स्वभावयुक्त और रोगरहित पराक्रम सहित शरीर ब्रह्मचर्य अर्थात् वेदादि सत्यशास्त्र और परमात्मा की उपासना का अभ्यास कर्मादि करते उनके वे सब उत्तम गुण बुरे काम और दुःखों को नष्ट कर सर्वोत्तम धर्मयुक्त कर्म और सब सुखों को प्राप्त कराने हारे होते हैं और उन्हीं के सेवन से मनुष्य उत्तम अध्यापक और उत्तम विद्यार्थी हो सकते हैं।

(प्र०) शूरवीर किनको कहते हैं ?

जो मनुष्य वेदादि शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने में शूरवीर, जो दुष्टों के दलन और श्रेष्टों के पालन में शूरबीर अर्थात् दृढ़ोत्साही, उद्योगी जो निष्कपट, परोपकार, अध्यापकों की सेवा करके शूरवीर, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने जनक (पिता) की सेवा करके शूरवीर, जो माता की परिचर्या से शूरवीर, संन्यासाश्रम से युक्त अतिथि रूप होकर सर्वत्र भ्रमण करके परोपकार करने में शूर, जो वानप्रस्थाश्रम के कर्म और जो गृहाश्रम के व्यवहार में शूर होते हैं वे ही सब सुखों के लाभ करने कराने में अत्युत्तम होकर धन्यवाद के पात्र होते हैं कि जो अपना तन, मन, धन, विद्या और धर्मादि शुभगुण ग्रहण करने में सदा उपयुक्त करते हैं ॥

(प्र०) शिक्षा किसको कहते हैं ?

(उ०) जिससे मनुष्य विद्या आदि शुभ गुणों की प्राप्ति और अविद्यादि दोषों को छोड़ के सदा आनन्दित हो सके वह 'शिक्षा' कहाती है।

(प्र०) विद्या और अविद्या किसको कहते हैं ?

(उ०) जिससे पदार्थ का स्वरूप यथावत् जान कर उससे उपकार लेके अपने और दूसरों के सब सुखों को सिद्ध कर सके वह 'विद्या' और जिससे पदार्थों के स्वरूप को उलटा जानकर अपना और पराया अनुपकार कर लेवे वह 'अविद्या' कहाती है।

(प्र०) मनुष्य को विद्या की प्राप्ति और अविद्या के नाश के लिये क्या-क्या कर्म करना चाहिये ?

(उ०) वर्णोच्चारण से लेकर वेदार्थज्ञान के लिये ब्रह्मचर्य आदि कर्म करना योग्य है।

(प्र०) ब्रह्मचारी किसको कहते हैं ?

(उ०) जो जितेन्द्रिय होके ब्रह्म अर्थात् वेदविद्या के लिये, तथा आचार्य कुल में जाकर विद्या ग्रहण के लिये प्रयत्न करे वह 'ब्रह्मचारी' कहाता है।

(प्र०) आचार्य किसको कहते हैं ?

(उ०) जो विद्यार्थी को अत्यन्त प्रेम से धर्मयुक्त व्यवहार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षापूर्वक विद्या देने के लिये तन, मन और धन से प्रयत्न करे उसको 'आचार्य' कहते हैं।

(प्र०) अपनी सन्तानों के लिये माता, पिता और आचार्य क्या-क्या शिक्षा करें ?

(उ०) मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद ।

शतपथ ब्राह्मण ।

अहोभाग्य उस मनुष्य का है जिसका जन्म धार्मिक विद्वान् माता-पिता और आचार्य के सम्बन्ध से हो, क्योंकि इन तीनों ही की शिक्षा से मनुष्य उत्तम होता है। ये अपनी सन्तान और विद्यार्थियों को अच्छी भाषा बोलने, खाने, पीने, बैठने, वस्त्र धारण करने, माता, पिता आदि का मान्य करने, उनके सामने यथेष्टाचारी न होने, विरुद्ध चेष्टा न करने आदि के लिये प्रयत्न से नित्यप्रति उपदेश किया करें और जैसा जैसा उसका सामर्थ्य बढ़ता जाय वैसी वैसी उत्तम बातें सिखलाते जायँ। इसी प्रकार लड़के और लड़कियों को पाँच व आठ वर्ष की अवस्था पर्यन्त माता पिता और इसके उपरान्त आचार्य की शिक्षा होनी चाहिये।

(प्र०) क्या जैसी चाहे वैसी शिक्षा करे ?

(उ०) नहीं, जो अपनी पुत्री और विद्यार्थियों को सुनावें कि सुन मेरे बेटे, बेटियाँ और विद्यार्थी ! तेरा शीघ्र विवाह करेंगे, तू उसकी डाढ़ी मूंछ पकड़ले, इसकी जटा पकड़ के ओढ़नी फेंक दे, धौल मार, गाली दे, इसका कपड़ा छीन ले, पगड़ी वा टोपी फेंक दे, खेल, कूद, हँस, रो, तुम्हारे विवाह में फुलवारी निकालेंगे इत्यादि कुशिक्षा करते हैं उसको माता पिता और आचार्य न समझना चाहिये किन्तु सन्तान और शिष्यों के पक्के शत्रु और दुःखदायक हैं, क्योंकि जो बुरी चेष्टा देख कर लड़कों को न घुड़कते और न दण्ड देते वे क्योंकर माता, पिता और आचार्य हो सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, क्योंकि जो अपने सामने यथातथा बकने, निर्लज्ज होने, व्यर्थ चेष्टा करने आदि बुरे कर्मों से हटा कर विद्या आदि शुभ गुणों के लिये उपदेश नहीं करते, तन, मन, धन लगा के उत्तम विद्या व्यवहार का सेवन कराकर अपने सन्तानों को सदा श्रेष्ठ नहीं करते जाते हैं वे माता, पिता और आचार्य कहाकर धन्यवाद के पात्र कभी नहीं हो सकते और जो अपने सन्तान और शिष्यों को ईश्वर की उपासना, धर्म, अधर्म, प्रमाण, प्रमेय, सत्य, मिथ्या, पाखण्ड, वेदशास्त्र आदि का लक्षण और उनके स्वरूप का यथावत् बोध करा और सामर्थ्य के अनुकूल उनको वेद शास्त्रों के वचन भी कण्ठस्थ कराकर विद्या पढ़ने, आचार्य के अनुकूल रहने की रीति जना देवें कि जिससे विद्या प्राप्ति आदि प्रयोजन निर्विघ्न सिद्ध हों, वे ही माता पिता और आचार्य कहाते हैं।

(प्र०) मनुष्य किसको कहते हैं ?

(उ०) इस मनुष्य जाति में एक ऐसा गुण है कि वैसा किसी दूसरी जाति में नहीं पाया जाता।

(प्र०) वह कौनसा है ?

(उ०) जितने मनुष्य से भिन्न जातिस्थ प्राणी हैं उनमें दो प्रकार का स्वभाव है। बलवान से डरना, निर्बल को डराना और पीड़ा कर अर्थात् दूसरे का प्राण तक निकाल के अपना मतलब साध लेना देखने में आता है। जो मनुष्य ऐसा ही स्वभाव रखता है उसको भी इन्हीं जातियों में गिनना उचित है, परन्तु जो निर्बल पर दया, उनका उपकार और निर्बलों को पीड़ा देने वाले अधर्मी बलवानों से किञ्चिन्मात्र भी भय, शंका न करके इनको परपीड़ा से हटा के निर्बलों की रक्षा तन, मन और धन से सदा करता है वही मनुष्यजाति का निज गुण है, क्योंकि जो बुरे कामों के करने में भय और सत्य कामों के करने में किञ्चित् भी शङ्का नहीं करते वे ही मनुष्य धन्यवाद के पात्र कहाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(प्र०) क्यों जी! सर्वदा सत्य से तो कोई व्यवहार सिद्ध नहीं हो सकता। देखो! व्यापार में सत्य बात कह दें तो किसी पदार्थ का विक्रय न हो, हार जीत के व्यवहारों में मिथ्या साक्षी न खड़े करें तो हार हो जाय, इत्यादि हेतुओं से सब ठिकानों में सत्यभाषण कैसे कर सकते हैं?

(उ०) यह बात महामूर्खता की है। जैसे किसी ग्राम में लालबुझक्कड़ रहता था जिसको पाँच सौ ग्राम वाले महापण्डित और एक गुरु मानते थे। एक रात में किसी राजा का हाथी उसी ग्राम के समीप होकर कहीं स्थानान्तर को चला गया था, उसके पग के चिह्न जहाँ-तहाँ मार्ग में बन रहे थे उनको देख के खेत करने हारे ग्रामीण लोगों ने परस्पर पूछा कि भाई, यह किसका खोज है? सबने कहा कि हम नहीं जानते फिर सब की सम्मति से लालबुझक्कड़ को बुला के पूछा कि तुम्हारे विना कोई भी मनुष्य इसका समाधान नहीं कर सकता। कहो यह किसके पग का चिह्न है? जब वह रोया और रोकर हँसा सब ने पूछा कि तुम क्यों रोये और क्यों हँसे? तब वह बोला कि जब मैं मर जाऊँगा तब ऐसी-ऐसी बातों का उत्तर मेरे विना कौन दे सकेगा और हँसा इसलिये कि इसका उत्तर सहज है। सुनो?

लालबुझक्कड़ बूझिया और न बूझा कोय।
पग में चक्की बांध के हिरना कूदा होय॥

जो जंगल का हिरन होता है वह किसी जंगली मनुष्य की चक्की के पाटों को अपने पगों में बांध के कूदता चला गया है, तब सुनकर सब लोगों ने वाह वाह बोल कर उसको धन्यवाद दिया कि तुम्हारे सदृश पृथ्वी पर कोई भी पंडित नहीं है कि ऐसी ऐसी बातों का उत्तर दे सके।

जब वह लालबुझक्कड़ ग्राम की ओर आता ही था इतने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में एक ग्रामीण स्त्री ने जंगल के बेर लाके जो अपना लड़का छप्पर के खम्भे को पकड़ कर खड़ा था उसको कहा कि बेटा, बेर ले, तब उसने हाथों की अंजलि बांध के बेरों को ले लिया, परन्तु जब छप्पर की थूनी हाथों के बीच में रहने से उसका मुख बेर तक न पहुँचा तब लड़का रोने लगा उसको रोते देखकर उसकी माँ और बाप भी रोने लगे कि हाय मेरे लड़के को खम्भे ने पकड़ लिया रे रे रे! तब उसको सुनके अड़ोसी-पड़ोसी भी रोने लगे कि हाय दय्या! उसके लड़के को खम्भे ने कैसा पकड़ लिया है कि छोड़ता ही नहीं। तब किसी ने कहा कि लालबुझक्कड़ को बुलाओ उसके विना कोई लड़के को नहीं छुड़ा सकेगा। तब एक मनुष्य उसको शीघ्र बुला लाया, फिर उसको पूछा कि यह लड़का कैसे छूट सकता है? तब वह बोला कि सुनो! दो प्रकार से यह लड़का छूट सकता है एक तो यह कि कुल्हाड़ा लाके लड़के का एक हाथ काट डालो, अभी छूट जाय और दूसरा उपाय यह है कि प्रथम छप्पर को उठा के नीचे धरो फिर लड़के को थूनी के ऊपर से उतार ले आओ। तब लड़के का बाप बोला हम दरिद्र मनुष्य हैं, हमारा छप्पर टूट जायगा तो छाना कठिन है। तब लालबुझक्कड़ बोला कि लाओ कुल्हाड़ा फिर क्या देख रहे हो, कुल्हाड़ा लाके जबतक हाथ काटने को तैयार हुए तब तक दूसरे ग्राम से एक बुद्धिमती स्त्री भी हल्ला सुनकर वहाँ पहुँच कर देख के बोली इसका हाथ मत काटो, मैं इस लड़के को छुड़ा देती हूँ। जब वह खम्भे के पास जाके लड़के की अञ्जलि के नीचे अपनी अञ्जलि करके बोली कि बेटा, मेरे हाथ में बेर छोड़ दे तब वह बेर छोड़ के अलग हो गया। फिर उसको बेर दे दिये, वह बेर खाने लगा। तब तो बहुत क्रुद्ध होकर लालबुझक्कड़ बोला यह लड़का छः महीने के बीच मर जायगा, क्योंकि जैसा मैंने कहा था वैसा ही करते तो न मरता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब तो उसके मा बाप घबरा के बोले कि अब क्या करना चाहिये ॥ तब उसी स्त्री ने समझाया कि यह बात झूठ है, और जो हाथ के काटने से अभी यह मर जाता तो तुम क्या करते ? मरण से बचने का कोई औषध नहीं। तब उनका घबराहट छूट गया। वैसे जो मनुष्य महामूर्ख हैं, वे ऐसा समझते हैं कि सत्य से व्यवहार का नाश और झूठ से व्यवहार की सिद्धि होती है। परन्तु जब किसी को कोई एक व्यवहार में झूठा समझले तो उसकी प्रतिष्ठा और विश्वास सब नष्ट होकर उसके सब व्यवहार नष्ट होजाते, और जो सब व्यवहारों में झूठ को छोड़ कर सत्य ही कहते हैं उनको लाभ ही लाभ होते हैं, हानि कभी नहीं। क्योंकि सत्य व्यवहार करने का नाम 'धर्म' और विपरीत का 'अधर्म' है।

(२)
सत्संगति

सत्संगति की महिमा अपार है। अच्छे मनुष्यों और बालकों की संगति में रहने से कोई भी मनुष्य या बालक श्रेष्ठ बन सकता है, क्योंकि वहाँ वह अच्छी-अच्छी बातें ही सुनता, सीखता और करता है। अच्छी बातें हमेशा कान में पड़ने से कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता ही है और थोड़े दिनों में दुष्ट से दुष्ट मनुष्य भी श्रेष्ठ बन जाता है जैसे एक महात्मा के उपदेश से संगति से एक डाकू मनुष्य भी श्रेष्ठ ऋषि बन गया, जिसका नाम बाद को वाल्मीकि हुआ, भेड़ चराने वाला एक मूर्ख मनुष्य भी संगति के प्रभाव से कालिदास जैसा महान् कवि बन गया। गुरु विरजानन्द की संगति और शिक्षा से स्वामी दयानन्द जैसे वेदों का परम विद्वान् और धर्म-प्रचारक बना। इस प्रकार के अनेक उदाहरण मिलेंगे।

महिमा जो सत्संग की, कबहुं न बरनी जाय।
बांस फाँस और मीसरी, एकहि भाव बिकाय ॥१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारस मणि के संग से, लोह स्वर्ण हुइ जात ।
बुध जन के ससगे से, मूढ़ सुबोध कहात ॥२॥

इसलिये ऐ बालका ! तुम सदा अच्छे लड़कों की संगति करो, दुष्ट लड़कों के साथ मत बैठो और मत रहो, मत उनसे बातचीत करो । सदा अच्छी ही बातें सुनो और अच्छी ही पुस्तकें पढ़ो, तो एक दिन आयेगा जब कि तुम्हारे विचार अच्छे बनते बनते तुम एक श्रेष्ठ और महान् पुरुष बन जावोगे । समय मिलने पर अच्छी सभाओं में जाना, आर्यसमाज के अधिवेशनों और उत्सवों में जाकर विद्वान् महात्माओं के सदुपदेश सुनना भी तुम्हारे लिए अत्यन्त आवश्यक और हितकर है । उससे तुम्हारा चरित्र और जीवन श्रेष्ठ बनेगा । महापुरुषों के जीवन-चरित्र पढ़ने से भी बहुत उत्तम शिक्षायें मिल सकती हैं, जैसे कि स्वामी दयानन्द के बाल्य-काल की कुछ घटनाओं से मिलती हैं, जो नीचे दी जाती हैं:—

बालक मूलशंकर

भारतवर्ष के पश्चिम में एक प्रान्त है जिसे गुजरात कहते हैं । उसी का एक भाग काठियावाड़ है, जिसमें एक राज्य मोरवी है, उसमें टंकारा ग्राम में श्री करसनलालजी तिवारी रहते थे जो वहां के तहसीलदार थे । वह सामवेदी औदीच्य ब्राह्मण थे । उनके घर में सवत् १८८१ में एक बालक उत्पन्न हुआ जिसका नाम मूलशंकर रक्खा गया । माता पिता उसे प्यार में "मूलजी" कहा करते थे । मूलशंकर हमें भी बहुत प्यारा है इसलिए हम भी उस बालक को "मूलशंकर" ही कहेंगे ।

शिक्षा का आरम्भ

पांच वर्ष की आयु में मूलजी को पढ़ने बिठाया गया । मूलजी बहुत तेज बुद्धि के थे । उन्होंने थोड़े ही दिनों में बहुत से वेदमन्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और संस्कृत के श्लोक कण्ठ कर लिये। आठवें वर्ष में मूलजी का जनेऊ हुआ। उनके पिता शिवजी के भक्त थे और उनको भी शिवजी का पक्का भक्त बनाना चाहते थे, इसलिये उन्हें शिवजी की पूजा का फल बताते और शिवजी की कथा सुनाते रहते थे।

शिव-पूजा

एक दिन उनके पिता करसनजी ने शिवरात्रि को मूलजी से व्रत रखने को कहा। मूलजी की माता ने अपने पति से बहुत कहा कि मूलजी से व्रत न रक्खा जायगा, परन्तु करसनजी कट्टर शिव-भक्त थे, वह भला क्यों मानने वाले थे? उन्होंने मूलजी से भी व्रत रखाया और रात को उन्हें टंकारा से बाहर एक शिव-मन्दिर में ले गये जहां और भी बहुत से शिवभक्त पूजा करने के लिये जमा हुए थे। पूजा करते-करते आधी रात पर सब को नींद आने लगी। सबसे पहले उनके पिता करसनजी ही सोने लगे। मूलजी तो इस डर से कि कहीं सोने से शिवजी अप्रसन्न न हो जायँ, अपनी आंखों पर पानी के छींटे दे देकर नींद को भगाते रहे।

सबके सोजाने पर मूलजी ने देखा कि एक चूहा पास के बिल में से निकल कर शिवजी की मूर्ति के ऊपर चढ़ा हुआ पकवान खाकर वहीं दण्ड पेल रहा है। उसको देखकर मूलजी ने आश्चर्य से सोचा "इस शिव को तो सबसे अधिक बलवान्, त्रिशूलधारी कहा जाता है। जब यह अपने ऊपर से एक चूहे को ही नहीं भगा सकता, तो हमारी क्या रक्षा करेगा?" बस उन्होंने झट अपने पिता को जगाया और अपनी शंका उनके सामने कही। अब करसनजी चुप! माथे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ रखकर सोचने लगे कि कहां ये चौदह वर्ष का बालक और कहां यह विकट प्रश्न ? उत्तर भी क्या देते ? जब ईश्वर की मूर्त्ति हो ही नहीं सकती, तो मूलजी को समझाते भी क्या ? वे बहुत सटपटाये और घबराये, परन्तु मूलजी प्रश्न पर प्रश्न करते गये। पिताजी से कुछ उत्तर न पाकर उन्होंने घर जाने की आज्ञा मांगी करसनजी ने चपरासी के साथ उन्हें घर भेज दिया। घर आकर उन्होंने माता से खाना मांगा। उनकी माता ने प्रेम से खाना दिया। जब प्रातः पिताजी घर आये तो मूलजी के व्रत तोड़कर खाना खाने पर बहुत नाराज हुए, लेकिन मूलजी ने तो उसी दिन से एक सत्य बात समझ कर मूर्तिपूजा को सर्वदा के लिये त्याग दया। बालको ! क्या तुम भी प्यारे मूलजी की तरह झूठी को छोड़कर सत्य बातों को मानोगे ? देखो, मूर्ति-पूजा के विषय में एक कवि कहता है:—

प्रार्थना-भजन

(१)

अजब हैरान हूँ भगवन्, तुम्हें क्यों कर रिझाऊँ मैं।
न कोई वस्तु है ऐसी, जिसे सेवा में लाऊँ मैं॥ १॥
भुजायें हैं, न गर्दन है, न सीना है न पेशानी।
तू है निर्लेप नारायण, कहां चन्दन लगाऊँ मैं॥ २॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हीं हो मूर्ति में व्यापक, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में ।
भला भगवान् को भगवान् पर क्यों कर चढ़ाऊं मैं ॥ ३ ॥

तुम्हारी ज्योति से रोशन, हैं सूरज चाँद और तारे ।
महा अन्धेर है तुमको, अगर दीपक दिखाऊं मैं ॥ ४ ॥

लगाना भोग कुछ तुमको, महा अपमान करना है ।
खिलाता है जो सब जगको, उसे क्योंकर खिलाऊं मैं ॥५॥

बड़े नादान हैं वे जन, गढ़ें जो आपकी मूरति ।
बनाते विश्व को तुम हो, तुम्हें क्योंकर बनाऊँ मैं ॥ ६ ॥

(२)

(बालकों की प्राथना)

वह शक्ति हमें दो दयानिधे !
कर्त्तव्य मार्ग पर डट जावें ।
पर-सेवा पर-उपकार में हम,
पीछे को कभी न हट जावें ॥ १ ॥
हम दीन-दुखी, निबलों, विकलों
के सेवक बन सन्ताप हरें ।
जो हैं अटके, भूले भटके,
उनको तारें, खुद तर जावें ॥ २ ॥
हम खुल खेलें, संकट झेलें,
कर्त्तव्य क्षेत्र से हटें नहीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सिर पर विपदा पदे-पदे,
भू गगन भले ही फट जावें ॥ ३ ॥
निज-आन-मान मर्यादा का,
प्रभु ! ध्यान रहे, अभिमान रहे ।
जिस देश जाति में जन्म लिया,
उस पर सर्वस्व दे कट जावें ॥ ४ ॥

(३)

भगवन् ! हमें जगत् में बस वीर नर बनाओ ।
हों धीर वीर सच्चे, गम्भीरतर बनाओ ॥ १ ॥
संसार-पथ विकट हो, यदि मौत भी निकट हो ।
कुछ भी न भय प्रकट हो, ऐसा निडर बनाओ ॥ २ ॥
विद्या पढ़ें पढ़ावें, ठोकर कहीं न खावें ।
आगे क़दम बढ़ावें, वह शक्तिधर बनाओ ॥ ३ ॥
संकट सभी सहें हम, मन मस्त ही रहें हम ।
गुण को सदा गहें हम, आनन्दकर बनाओ ॥ ४ ॥
नहिं आपको भुलावें, श्रुति हेतु बलि चढ़ावें ।
बन "सूर्य" तम भगावें, तेजस्वि-वर बनाओ ॥ ५ ॥

❀ जो बोले सो अभय, वैदिक धर्म की जय ॥ ❀

Entered in Database
Signature with Date
गुरुकुल कांगड़ी
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों वेद सरल हिन्दी अनुवाद सहित

[भाष्यकार—श्री पं० जयदेव शर्मा, विद्यालङ्कार, मीमांसातीर्थ.]

संपूर्ण १४ खण्डों का मूल्य ७३) रु० नेट.

उत्तम छपाई, बम्बई-निर्णयसागरी-टाइप, सफ़ेद चिकना काग़ज़,
डबल क्राउन १६ पेजी के सुलभ आकार में

इष्ट-मित्रों के लिये पवित्र उपहार, पुस्तकालयों और घर की आलमारियों का सुन्दर भूषण, विवाहों और अन्य धार्मिक अवसरों पर देने के लिये आदर्श भेंट, छात्रों के लिये पवित्र पारितोषिक और नित्य आत्मिक आनन्द तथा पुण्य-कर्तव्य पालन करने का अपूर्व साधन।

"प्रत्येक आर्यगृह, आर्यपुस्तकालय, वैदिक स्वाध्यायप्रेमी आर्य नर-नारी के पास ईश्वरीय ज्ञान वेद भगवान् की एक-एक प्रति अवश्य होनी चाहिये"

सामवेद	१ खण्ड	५) रु०	अथर्ववेद	४ खण्ड	२०) रु०
यजुर्वेद	२ खण्ड	१३) ,,	ऋग्वेद	७ खण्ड	३५) ,,

प्रत्येक जिल्द लगभग ८०० पृष्ठों की पूरे कपड़े की बँधी हुई, सुनहरे अक्षरों सहित.

मैनेजर,

आर्य-साहित्य मण्डल लिमिटेड, अजमेर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मण्डल" का प्रकाशित साहित्य

महर्षिकृत ग्रन्थों के सस्ते व सुलभ संस्करण

सत्यार्थप्रकाश	१॥)	आर्यपर्वपद्धति	१॥)
संस्कारविधि	॥=)	संस्कृतवाक्यप्रबोध	॥)
व्यवहारभानु	=)	सन्धिविषय	॥)
पंचमहायज्ञविधि	=)	हवनमन्त्र	)॥)
आर्योद्देश्यरत्नमाला	)॥)	नित्यकर्मविधि	)॥)

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका बुक साइज २) सजिल्द २॥)

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनचरित्र

(६ भागों में) सजिल्द १०)

वैदिक मनोविज्ञान १=) पुरुषार्थप्रकाश १॥)

भारतीय सभ्यता का शास्त्र १॥) स्वाध्याय कुसुमांजलि १)

चारों वेद सरल हिन्दी भाष्य सहित १४ भागों में ७३)

सामवेद १ जिल्द ५) ऋग्वेद ७ जिल्द ३५)

यजुर्वेद २ जिल्द १३) अथर्ववेद ४ जिल्द २०)

नई पुस्तकें

रामायणदर्पण १) कर्तव्यदर्पण १)

पातञ्जल योगप्रदीप, लेखक स्वा० ओमानन्दजी १२)

युद्धनीति और अहिंसा १) वैदिक अध्यात्मसुधा ॥=)

हैदराबाद सत्याग्रह का रक्तरंजित इतिहास ३)

पुस्तकें मिलने का पता—

आर्य साहित्य मण्डल लि०, अजमेर.

Printed at the Fine Art Printing Press, Ajmer.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों वेद सरल हिन्दी अनुवाद सहित

[भाष्यकार—श्री पं० जयदेव शर्मा, विद्यालङ्कार, मीमांसातीर्थ.]

संपूर्ण १४ खण्डों का मूल्य ७३) रु० नेट.

उत्तम छपाई, बम्बई-निर्णयसागरी-टाइप, सफ़ेद चिकना काग़ज,
डबल क्राउन १६ पेजी के सुलभ आकार में

इष्ट-मित्रों के लिये पवित्र उपहार, पुस्तकालयों और घर की अलमारियों का सुन्दर भूषण, विवाहों और अन्य धार्मिक अवसरों पर देने के लिये आदर्श भेंट, छात्रों के लिये पवित्र पारितोषिक और नित्य आत्मिक आनन्द तथा पुण्य-कर्तव्य पालन करने का अपूर्व साधन।

"प्रत्येक आर्यगृह, आर्यपुस्तकालय, वैदिक स्वाध्यायप्रेमी आर्य नर-नारी के पास ईश्वरीय ज्ञान वेद भगवान् की एक-एक प्रति अवश्य होनी चाहिये"

सामवेद	१ खण्ड	५) रु०	अथर्ववेद	४ खण्ड	२०) रु०
यजुर्वेद	२ खण्ड	१३) ,,	ऋग्वेद	७ खण्ड	३५) ,,

प्रत्येक जिल्द लगभग ८०० पृष्ठों की पूरे कपड़े की बँधी हुई, सुनहरे अक्षरों सहित

मैनेजर,

आर्य-साहित्य मण्डल लिमिटेड, अजमेर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मण्डल" का प्रकाशित साहित्य

महर्षिकुल ग्रन्थों के सस्ते व सुलभ संस्करण

सत्यार्थप्रकाश	१॥)	आर्यपर्वपद्धति	१॥)
संस्कारविधि	॥=)	संस्कृतवाक्यप्रबोध	॥)
व्यवहारभानु	=)	सन्धिविषय	॥)
		गोकरुणानिधि	=)
पंचमहायज्ञविधि	=)	हवनमन्त्र	)॥
आर्योद्देश्यरत्नमाला	)॥	नित्यकर्मविधि	)॥

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका-बुक साइज २) सजिल्द २॥)

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनचरित्र

(२ भागों में) सजिल्द १०)

वैदिक मनोविज्ञान	।=)	पुरुषार्थप्रकाश	१॥)
भारतीय समाजशास्त्र	१॥)	स्वाध्याय कुसुमांजलि	१)

चारों वेद सरल हिन्दी भाष्य सहित १४ भागों में ७३)

सामवेद १ जिल्द	)	ऋग्वेद ७ जिल्द	३५)
यजुर्वेद २ जिल्द	१३)	अथर्ववेद ४ जिल्द	२०)

नई पुस्तकें

रामायणदर्पण	१)	कर्तव्यदर्पण	१॥)

पातञ्जल योगप्रदीप, लेखक स्वा० ओमानन्दजी १२)

युद्धनीति और अहिंसा	१।)	वैदिक अध्यात्मसुधा	॥=)

हैदराबाद सत्याग्रह का रक्तरंजित इतिहास ३)

पुस्तकें मिलने का पता—

आर्य साहित्य मण्डल लि०, अजमेर.

Printed at the Fine Art Printing Press, Ajmer.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar